1. पृथ्वी पर (33½ वर्ष)

2. अधोलोक में (3 दिन)

3. स्वर्ग में (लगभग 2000 वर्ष से अधिक)

4. फिर से पृथ्वी पर (1000 वर्ष)

इन चार भागों को समझना हमारे लिए अत्यंत आवश्यक है, ताकि हम यह जान सकें कि वर्तमान में हमारे प्रभु यीशु मसीह की सेवा किस अवस्था में है और यह उसकी प्रजा के लिए क्या अर्थ रखती है।

1. पृथ्वी पर (33½ वर्ष)

जब प्रभु यीशु पृथ्वी पर आए, तो उन्होंने 33½ वर्षों तक जीवन व्यतीत किया। इस समय में उनका उद्देश्य था मानव जाति को सिखाना और उन्हें पाप और मृत्यु के श्राप से छुड़ाना।

क्रूस पर उन्होंने अपना उद्देश्य पूरा किया। जब उन्होंने कहा:

“पूर्ण हुआ।”
(यूहन्ना 19:30)

इसका अर्थ था कि उस क्षण से हर एक व्यक्ति जो उस पर विश्वास करेगा, उद्धार पाएगा।
प्रभु की सेवा का यह पहला चरण वहीं पूरा हुआ।

2. अधोलोक में (3 दिन)

दूसरा उद्देश्य अधोलोक से संबंधित था।

यीशु के मरने के बाद वे सीधे स्वर्ग नहीं गए, बल्कि वे अधोलोक में उतरे – वह स्थान जहाँ सभी मृत आत्माएँ रहती थीं, धर्मी और अधर्मी दोनों।
वे अलग-अलग स्थानों पर रखे गए थे: अधर्मी न्याय के बंधनों में, और धर्मी एक सुरक्षित स्थान पर।

यीशु ने वहाँ जाकर दोनों समूहों को सेवा दी। अधर्मियों को उन्होंने उनके पापों का कारण बताया, कि क्यों वे न्याय के योग्य हैं।

1 पतरस 3:19–20:
“जिसमें उसने जाकर बंदीगृह में पड़ी आत्माओं को भी प्रचार किया।
वे वही हैं जिन्होंने पहले परमेश्वर की धीरज के समय नूह के

दिनों में आज्ञा नहीं मानी थी, जब जहाज बनाया जा रहा था।”

इसका अर्थ है कि यदि कोई व्यक्ति पाप में मरता है, तो वह भी इसी स्थिति में जाएगा — अधोलोक में, जहाँ न शांति है, न आशा।
यही नर्क है, जो पृथ्वी के नीचे स्थित है।

परन्तु जो धर्मी थे, उन्हें यीशु ने मुक्त किया और एक सुंदर स्थान – स्वर्गलोक (परदाइस) में ले गए।

मत्ती 27:50–52:
“फिर यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए।
और देखो, मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया, और पृथ्वी कांप गई, और चट्टानें फट गईं।
और कब्रें खुल गईं; और सोए हुए बहुत से पवित्र जनों की देहें जी उठीं।”

इसलिए यदि कोई अब मसीह में मरता है, तो वह नीचे नहीं जाता, बल्कि ऊपर उठा लिया जाता है – परन्तु अभी उस स्थान तक नहीं जहाँ यीशु है, बल्कि मध्याकाश में एक स्थान पर, जहाँ वह अपनी देह के उद्धार के दिन, यानी कलीसिया के उठाए जाने (Entrückung) के दिन की प्रतीक्षा करेगा।

उस दिन जीवित और मरे हुए संत एक साथ यीशु से मिलने को स्वर्ग

उठाए जाएंगे।
इसलिए, यीशु की यह सेवा चरण उनके पुनरुत्थान पर पूरी हुई। (देखें: 1 कुरिन्थियों 15:51–55)

3. स्वर्ग में (2000+ वर्ष)

यह वर्तमान में जारी यीशु की सेवा है।
स्वर्ग में वह हमारे लिए मध्यस्थता कर रहे हैं और एक स्थान तैयार कर रहे हैं।

यूहन्ना 14:1–3:
“तुम्हारा मन व्याकुल न हो; तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो।
मेरे पिता के घर में बहुत से निवास स्थान हैं; यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिये स्थान तैयार करने जाता हूँ।
और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये स्थान तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने पास ले लूँगा; कि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी रहो।”

जब यीशु ने कहा, “मैं स्थान तैयार करने जाता हूँ”, तो इसका अर्थ था कि पहले से हमारे लिए कोई स्थायी स्थान स्वर्ग में नहीं था। यह स्थान है – नया यरूशलेम – जो परमेश्वर की ओर से उतरेगा, जब 1000 वर्षों का राज्य समाप्त होगा।

यह हमारी अनन्त निवास स्थली होगी – एक ऐसा स्थान जिसे किसी ने न आँखों से देखा, न कानों से सुना।

1 कुरिन्थियों 2:9:
“जो बातें न आँख ने देखी, न कान ने सुनी, और न किसी मनुष्य के चित्त में आईं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिये तैयार की हैं।”

4. फिर से पृथ्वी पर (1000 वर्ष)

यह चरण वह समय है जब यीशु मसीह अपने संतों के साथ इस पृथ्वी पर राज्य करेंगे — 1000 वर्ष का शांतिपूर्ण राज्य, जो प्रभु की दूसरी आगमन के साथ आरंभ होगा।

इस बार वे एक राजा के रूप में आएँगे – राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु।
यह संतों के लिए विश्राम का समय होगा – उनकी आत्मिक विश्राम सब्बाथ।

आप पूछ सकते हैं – क्यों हमें सीधे नए यरूशलेम में नहीं ले जाया गया?

क्योंकि प्रभु अपने विश्वासयोग्य जनों को दिखाना चाहते हैं कि उन्होंने पृथ्वी पर जो कुछ भी उसके लिए त्याग किया — अपमान, तिरस्कार, हानि, यहाँ तक कि जीवन – वह सब व्यर्थ नहीं था।
इसलिए वह उन्हें वह समय लौटाएंगे – सुख और राज्य का समय – जब वे उसके साथ मिलकर पृथ्वी पर राज्य करेंगे।

प्रकाशितवाक्य 20:1–4 में हम पाते हैं कि संत मसीह के साथ राज्य करेंगे — शांति और आनंद से परिपूर्ण एक नया युग।

निष्कर्ष – समय बहुत कम है!

प्रिय भाई/बहन, जब हम इन बातों को समझते हैं, तो हम जानते हैं कि हमारे पास अब बहुत कम समय बचा है।
कभी भी कलीसिया की उठाई जाने की घटना (Entrückung) हो सकती है — अनुग्रह का द्वार बंद हो जाएगा।
सभी भविष्यवाणियाँ पूरी हो चुकी हैं।

क्या तुम तैयार हो प्रभु से मिलने के लिए?

यहाँ तक कि यदि वह आज नहीं लौटता — अगर तुम आज ही मर जाओ, तो किसका अतिथि बनोगे?

□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□
□□□□□ □□ □□ □□□□□, □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ — □□ □□□ □□□□
□□□□□, □□□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□

□□ □□□ □□□ □□ □□□□
□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□□ — □□□□ □□□□
(Entrückung) □□□

Maranatha – □□□□□ □ □□□ □□!

□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp